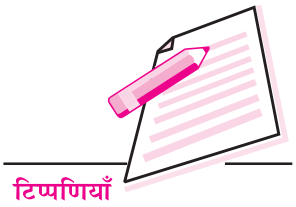

9

भारत में संस्कृति और धरोहर – I: हिंदू धर्म, जैन धर्म और बौद्ध धर्म

सिंधु घाटी सभ्यता के साथ शुरुआत करते हुए, प्राचीन समय में हमने पढ़ा था कि भारतीय सभ्यता में निरंतर प्रगतिशील बदलाव होते रहे थे। समाज में ब्राह्मणों का प्रभुत्व था। क्षत्रियों का राजनीति पर नियंत्रण था और वैश्यों का अर्थव्यवस्था पर। समाज में शुद्र सबसे निम्न सदस्य के रूप में थे और अन्य वर्णों के लोगों को सेवाएँ देते थे। छठी शताब्दी ईसा पूर्व तक हम समाज में काफी बदलाव देखते हैं। रूढ़िवादी प्रणाली में ब्राह्मणों द्वारा लोगों पर नियंत्रण करने के प्रयास के कारण नए धर्मों, जैसे- बौद्ध और जैन धर्म का उदय हुआ। इस पाठ में हम, हिंदुओं की जीवन-शैली के बारे में भी पढ़ेंगे और यह भी जानेंगे कि दो प्रमुख धर्म-बौद्ध और जैन अलग-अलग धर्मों के रूप में किस तरह उभर कर आए।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप:

- हिंदुओं के धर्म और उनके धार्मिक स्थलों के बारे में उल्लेख कर सकेंगे;
- जैन धर्म की शिक्षाओं और उनके धार्मिक स्थलों के बारे में भी वर्णन कर सकेंगे और
- बौद्ध धर्म की शिक्षाओं और उनके धार्मिक स्थलों की व्याख्या कर सकेंगे।

9.1 हिंदू

हिंदू जीवन-शैली हर प्रकार से लचीली है क्योंकि यह ईश्वर के सभी रूपों और भक्तों को स्वीकार करती है। यहाँ ईश्वर के किसी एक रूप या धर्म गुरु में विश्वास नहीं किया जाता है। यह हठधर्मिता से परे है। इनके रीति-रिवाज़ रंगारंग एवं उत्साहपूर्ण और त्योहार स्फूर्ति से भरे होते हैं। अपने रस्मों और रिवाज़ों से हिंदू लोग अधिकतर मंदिरों में स्थापित दिव्य मूर्तियों की पूजा करते हैं। दिव्य मूर्तियों के दर्शन बहुत महत्व रखते हैं। ऐसा माना जाता है कि इससे ईश्वर भी भक्तों को समान महत्व

से देखते हैं। ईश्वर के दर्शन करने के लिए और अपना संबंध ईष्ट से गहरा करने के लिए अधिकतर हिंदू देश के कोने-कोने में बसे तीर्थ स्थानों जैसे, पवित्र नदियों, पहाड़ों और मंदिरों में जाते हैं। हिंदू उन्हें पवित्र स्थान या तीर्थ कहते हैं तथा इन तीर्थों पर जाने को तीर्थ-यात्रा कहते हैं। तीर्थ का अर्थ कष्ट से मुक्ति के लिए यात्रा करना या पवित्र स्थल है। वेदों के समय में इन स्थलों का संबंध केवल उन्हीं स्थानों से होता था जो पानी से जुड़े होते थे परंतु महाभारत काल तक आते-आते तीर्थ किसी पवित्र झील, पहाड़, वन या गुफ़ा को भी माना जाने लगा। तीर्थों का अर्थ भौतिक स्थलों से अधिक है। हालाँकि हिंदू अध्यात्मिक स्थानों, स्वर्ग और धरती का मिलन-स्थल, ऐसे स्थान जहाँ मोक्ष की प्राप्ति के लिए कोई जन्म, मृत्यु तथा पुनर्जन्म के बंधनों से मुक्त हो सकता है, आदि को तीर्थ स्थल मानते हैं। ऐसे स्थलों की यात्रा तीर्थ-यात्रा कहलाती है।

9.1.1 हिंदुओं के पवित्र स्थान और धरोहर

मोक्ष की प्राप्ति हेतु हिंदुओं के लिए, पवित्र स्थानों पर जीवन में एक बार यात्रा करना अत्यंत महत्वपूर्ण धार्मिक क्रियाकलाप माना जाता है। चारों धाम या मठ महान संत शंकराचार्य द्वारा स्थापित किए गए हैं। चूँकि ये भारत के चारों कोनों में स्थित हैं, इसलिए यह सामाजिक-सांस्कृतिक एकीकरण को दर्शाता है और बाद में इसने भारत को राष्ट्र के रूप में स्थापित किया।

इन मठों की स्थापना के अतिरिक्त, यहाँ चार धाम भी हैं- बद्रीनाथ, पुरी, द्वारका और रामेश्वरम। ऐसे भक्त जो इन मठों और धामों की यात्रा करते हैं, इन्हें धार्मिक पर्यटक कहते हैं।

द्वारका

गुजरात स्थित द्वारका भगवान कृष्ण से संबंधित महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। यह शहर भारत के पश्चिमी तट पर स्थित है। यह कृष्ण के साम्राज्य की राजधानी थी और यहाँ बहुत से महत्वपूर्ण मंदिर स्थित हैं। यहाँ के प्रमुख मंदिर को 'जगत मंदिर' के नाम से जाना जाता है।

पुरी और दिव्य रथ

पुरी में भगवान जगन्नाथ का बहुत ही भव्य मंदिर है जो ओडिशा के रक्षक माने जाते हैं। ईसा पश्चात आठवीं शताब्दी में हिंदू धर्म के अनंत मूल्यों का प्रसार करने के लिए आदि शंकराचार्य द्वारा चुने गए स्थानों में से यह एक है। ये स्थान उत्तर में हिमालय पर स्थित बद्रीनाथ, पश्चिम में समुद्र पर स्थित द्वारका और कर्नाटक में पश्चिम शृंगेरी में कांची हैं। पुरी के मंदिर में भगवान जगन्नाथ, उनके भ्राता बलराम और उनकी बहन सुभद्रा की प्रतिमाएँ साथ-साथ हैं।

पुरी के साथ जुड़े मनोरम कार्यक्रमों में से एक है- वार्षिक रथ यात्रा जो कि न केवल यात्रियों के लिए प्रमुख आकर्षण है बल्कि भक्तों के एकत्रित होने का स्थान भी है। इस रथ यात्रा में, तीनों प्रतिमाओं को उनके अलग-अलग रथों पर निकाला जाता है जिसे पुरी की गलियों में हजारों लोग खींच कर ले जाते हैं। इन्हें गुंडिचा मंदिर में लेकर जाते हैं और कुछ समय के बाद इन्हें वापस उनके सनातन स्थान पर ले जाते हैं (चित्र 9.1)।

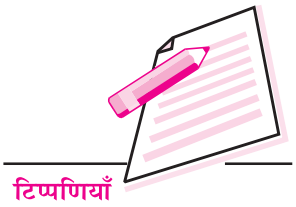

चित्र 9.1: पुरी

शृंगेरी

शृंगेरी पश्चिम भारत में स्थित मुख्य हिंदू तीर्थ स्थलों में से एक माना जाता है। यह मैसूर के कादुर जिले में तुंगा नदी के बाएँ तट पर स्थित है। यहाँ की मुख्य देवी सरस्वती या शारदाम्बा या शरद अम्बा है। यह माना जाता है कि परंपराओं और प्रवचन में मठ गैर-सांप्रदायिक है। मुस्लिम कर्मचारियों के लिए गुरु के आदेश पर मंदिर की सीमा पर एक मस्ज़िद बनाई गई है। तुंगा नदी मंदिर के पास बहती है और यहाँ बड़ी संख्या में आए श्रद्धालु इन घाटों पर हज़ारों मछलियों को अपने हाथों से दाना डालते हैं।

जय बद्री विशाल

बद्रीनाथ स्थित 'जय बद्री विशाल' भगवान विष्णु के निवास स्थल के रूप में जाना जाता है। यह उत्तराखंड राज्य में स्थित है। पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान विष्णु और उनकी पत्नी अलकनंदा नदी के दाएँ तट पर तपस्या के लिए आए थे। भगवान विष्णु बहुत लंबे ध्यान में मग्न थे और इसीलिए अपने पति को छाया देने के लिए देवी लक्ष्मी ने बद्री के वृक्ष का रूप धारण कर लिया। इसीलिए इस नगर का नाम बद्रीनाथ पड़ गया। वर्तमान बद्रीनाथ मंदिर गढ़वालों के द्वारा बनवाया गया था। अन्य हिंदू मंदिरों की तरह इसके भी तीन भाग हैं-

(i) वह पवित्र स्थान जहाँ देवी/देवताओं की प्रतिमाएँ स्थापित की गई हो।

(ii) वह क्षेत्र जहाँ रीतियों का पालन किया जाता है।

(iii) जहाँ तीर्थ यात्री और भक्तजन एकत्रित होते हैं। तीर्थ यात्री काले पत्थर की बनी ईश्वर की प्रतिमा के दर्शन और पूजा करने आते हैं। बहुत से तीर्थ यात्री अलकनंदा नदी में स्नान करते हैं और विष्णु मंदिर के सामने गर्म पानी के झरने से जल लेते हैं। यहाँ होने वाली भारी बर्फ़बारी के कारण हर वर्ष मंदिर मई से अक्तूबर तक ही खुलता है। बहुत अधिक संख्या में धार्मिक तीर्थ यात्री यहाँ आते हैं। कुछ लोग हर वर्ष यहाँ आते हैं।

वाराणसी जिसे पहले बनारस या काशी के नाम से जाना जाता था, सभी तीर्थ स्थानों में से सर्वाधिक पवित्र माना जाता है। यह शिव का शहर (स्थान) माना जाता है। यहाँ दो हज़ार से भी अधिक मंदिर हैं और लगभग पाँच लाख से भी अधिक प्रतिमाएँ है। इनमें से अधिकांश शिवजी और उनके परिवार से संबंधित हैं। यह पावन नदी गंगा के तटों पर स्थित है। फ्रेंच यात्री, प्रांकोसी बर्नियर (1656–1668 ईसवी) ने धार्मिक महत्व के अलावा बनारस की शैक्षिक महत्ता के बारे में भी बताया है। बनारस में कई गुरुकुल हैं। उनके शब्दों में, ''अत्यंत निर्मल और समृद्ध देश के बीचों बीच स्थित गंगा पर बसा एक खूबसूरत शहर, हिंदुओं का गुरुकुल भी माना जा सकता है। यह भारत का एथेंस है। इस शहर में हमारे विश्वविद्यालयों (यूरोपीय विश्वविद्यालयों) की तरह कोई कॉलेज या नियमित कक्षा का प्रावधान नहीं है परंतु यह प्राचीन काल के विद्यालयों से मिलता-जुलता है। शिक्षक शहर के विभिन्न स्थानों, प्राइवेट घरों और मुख्य रूप से उपनगरों में बिखरे होते थे। कुछ शिक्षकों के पास चार अनुयायी होते थे, तो कुछ के पास छह या सात, जो कि अधिकतम संख्या थी। आमतौर पर लोग अपने गुरु के पास दस-बारह वर्ष तक रहते थे।'' आशा करते हैं कि यह जानकारी इन धार्मिक स्थानों के बारे में अधिक जानने, पढ़ने तथा और भी अधिक जानकारी एकत्र करने के लिए प्रेरणा देगी।

चित्र 9.2: काशी मंदिर

गया वह स्थान है, जहाँ के लिए यह मान्यता है कि यदि यहाँ संस्कार किया जाए तो मृत की आत्मा को मोक्ष प्राप्त होता है। बहुत से हिंदू गया जाते हैं, जो चाहते हैं कि उनके पूर्वजों को मोक्ष मिले।

हरिद्वार - यह उत्तराखंड में हिमालय की निचली पहाड़ी पर स्थित वह स्थान है जहाँ गंगा मैदानी क्षेत्र में प्रवेश करती है। इसे 'गंगा का प्रवेशद्वार' भी कहा जाता है। हरिद्वार भारत के सबसे महत्वपूर्ण हिंदू तीर्थ स्थलों में से एक है। हरिद्वार की धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर बहुत समृद्ध है। हिंदुओं

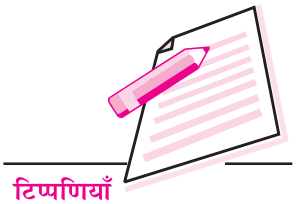

के धर्मग्रंथों में, हरिद्वार को मायापुर के नाम से जाना जाता है। इसे हरि का द्वार या ईश्वर के वास का प्रवेश स्थान माना जाता है।

अयोध्या हिंदुओं के प्रमुख पवित्र नगरों में से एक है। इसका प्राचीन भारतीय महाकाव्य में महत्वपूर्ण स्थान है। भगवान राम ने अयोध्या के राजकुमार के रूप में अवतार लिया था।

इस शहर में अन्य परंपराओं का भी पालन किया जाता है। जैन धर्म की परंपराओं के अनुसार इसे प्रथम और चतुर्थ तीर्थंकरों के जन्मस्थान के रूप में माना जाता है। बौद्ध धर्म की परंपरा यह बताता है कि इस शहर को देखने के लिए भगवान बुद्ध आए थे।

कांचीपुरम – कांचीपुरम तमिलनाडु स्थित भारत के उन सात शहरों में से एक है, जिन्हें अंतिम मोक्ष हेतु दर्शन करने के लिए आवश्यक माना जाता है। यहाँ हिंदुओं के प्रमुख मंदिर हैं– वर्धराजा पेरूमल मंदिर, एकांबरेश्वर मंदिर, कामाक्षी अम्मा मंदिर और कुमारकोट्टम। यह शहर शैव और वैष्णवों दोनों के लिए तीर्थ स्थल है। हिंदू देवता विष्णु के 108 मंदिरों में से 14 मंदिर कांचीपुरम में स्थित हैं।

उत्तराखंड स्थित **केदारनाथ** चारों धामों में से सबसे दूरस्थ है। यह हिमालय की गोद में चोराबाड़ी हिमनद के पास मंदाकिनी नदी के शीर्ष पर स्थित है। यह हिंदुओं के सबसे पावन मंदिरों में से एक हैं। केदारनाथ मंदिर विश्व भर में लोकप्रिय हिंदुओं का तीर्थ स्थल है। भारत के छोटे चार धाम तीर्थों में से प्रसिद्ध केदारनाथ का नाम राजा केदार के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने सतयुग में शासन किया था। इनकी पुत्री का नाम वृंदा था, जिन्हें आंशिक रूप से लक्ष्मी जी का अवतार माना जाता है।

सोमनाथ मंदिर गुजरात के पश्चिमी तट पर स्थित प्रभास क्षेत्र में स्थित है। यह भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। इसका अर्थ है – चंद्र देव का रक्षक। सोमनाथ का मंदिर शाश्वत तीर्थस्थान के नाम से जाना जाता है और हिंदुओं में अत्यंत पवित्र तथा पूजनीय तीर्थ स्थल माना जाता है।

अमरनाथ की गुफा जम्मू और कश्मीर स्थित लोकप्रिय तीर्थ स्थल है। यह भगवान शिव को समर्पित है। यह मंदिर हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण अंग है और हिंदुओं के मुख्य तथा पवित्र तीर्थ स्थलों में से एक है। यह गुफ़ा बर्फीले पहाड़ों से घिरी हुई है। इस गुफ़ा में अधिकतर समय बर्फ़ जमा रहती है। केवल गर्मियों में बहुत ही कम समय के लिए जब यह बर्फ़ हटती है, तब इसे तीर्थ यात्रियों के लिए खोला जाता है। बीहड़ पर्वतीय क्षेत्र होने के बावजूद भी अमरनाथ की गुफा में बर्फ़ से बने शिवलिंग के दर्शन करने के लिए लाखों हिंदू भक्त हर वर्ष यहाँ आते हैं।

कामाख्या हिमालय की पहाड़ियों में प्रकट हुई एक प्रमुख देवी थी। इन्हें काली और महा त्रिपुरा सुंदरी का रूप माना जाता है। इनके नाम का अर्थ है "इच्छा की प्रख्यात देवी।" वे पुनर्निर्मित कामाख्या मंदिर में निवास करती हैं और इन्हें शिला योनि (स्त्री उत्पादक अंग) के रूप में पूजा जाता है। सती की मिथकों से जुड़ा यह मंदिर 51 शक्ति पीठों में प्रमुख है। यह प्रमुख शक्ति मंदिरों और विश्व भर में स्थित हिंदुओं के मुख्य तीर्थों में से एक है।

कैलाश पर्वत चीन नगरी के दक्षिण-पश्चिमी तिब्बती क्षेत्र में स्थित एशिया का एक पवित्र तीर्थ स्थल है। यह तिब्बत के पठार पर 6714 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। हिंदू पुराणों के अनुसार इसे भगवान शिव का घर भी कहा जाता है।

चित्र 9.3: कैलाश पर्वत

यमुना नदी के किनारे दिल्ली और आगरा राजपथ पर **मथुरा** स्थित है। यह हिंदुओं के प्रिय भगवान श्री कृष्ण का जन्म स्थल है। उनसे बहुत-सी मनमोहक कहानियाँ हैं जिसमें आपदाओं के समय लोगों को बचाने से जुड़ी हैं। श्रीकृष्ण का गोपियों और गोप बालाओं के साथ नृत्य ईश्वर का अपने भक्तों के साथ नृत्य करना माना गया है। उत्सुक तीर्थयात्री मथुरा और वृंदावन के आसपास के स्थानों को देखने जाते हैं। दो मुख्य त्योहारों, होली और जन्माष्टमी के समय मथुरा और वृंदावन में भारतीय और विदेशी यात्रियों की भीड़ जमा रहती है। यात्रियों और पर्यटकों को मंदिर के आँगन में बहुत से भक्त विशेष रूप से महिलाएँ पूजा के पवित्र भजन गाती मिल जाएँगी। बाँके-बिहारी जैसे लोकप्रिय मंदिरों में तो कभी-कभी अपने प्रभु की स्थिति का आभास करके भक्त ईश्वर की भक्ति में नृत्य करते हुए भी दिखाई देते हैं। इसे बृजभूमि कहते हैं। यहाँ पर श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था, यहीं पर उनका यौवन बीता। यह होली के उत्सव को धूम-धाम से मनाने के लिए भी लोकप्रिय हैं।

नासिक भारत का एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है। पौराणिक कथाओं के अनुसार 14 वर्षों के वनवास के दौरान नासिक अयोध्या के राजा राम का अस्थायी निवास था।

प्रयाग जहाँ गंगा और यमुना का मिलन होता है, भारत के प्राचीन तीर्थस्थलों में से एक है। प्रयाग इलाहाबाद (अल्हा के शहर) में स्थित है। ऋग्वेद में प्रयाग की प्रशंसा की गई है। लोकप्रिय कुंभ का मेला भी यहीं आयोजित होता है जहाँ, पवित्र गंगा नदी में भक्त डुबकी लगाते हैं।

चित्र 9.4: पवित्र गंगा नदी

जगन्नाथ पुरी - हजारों भक्तगणों द्वारा दिव्य रथ को खींचे जाने के आयोजन को देखने के लिए बड़ी संख्या में विदेशी पर्यटक यहाँ पहुँचते हैं। पुरी हिंदुओं के चार पवित्र धामों (पुरी, द्वारका, रामेश्वरम और बद्रीनाथ) में से एक है।

रामेश्वरम भारतीय उपद्वीप के दक्षिणतम भाग पर स्थित है। यह हिंदुओं का पवित्र स्थल माना जाता है। पुराणों के अनुसार राजा राम ने अपनी पत्नी सीता जी की खोज के दौरान श्रीलंका तक जाने के लिए यहाँ समुद्र पर पुल बनाया था।

चित्र 9.5: रामेश्वरम मंदिर

उ**ज्जैन** शिप्रा नदी के पूर्वी तट पर स्थित है। यह भारत के प्राचीन शहरों में से एक है। यह मध्य प्रदेश के मलवा प्रदेश में स्थित है। प्राचीन काल में उज्जैन ''उज्जयनी'' और ''अवन्ती'' नाम से जाना जाता था।

चित्र 9.6: उज्जैन मंदिर

पुष्कर राजस्थान में स्थित है। यह सबसे पवित्र तीर्थस्थलों में से एक है। इस छोटे से नगर में लगभग 500 मंदिर हैं और यह हिंदुओं का सबसे पवित्र स्थान माना जाता है। भगवान ब्रह्मा का एकमात्र मंदिर पुष्कर में ही स्थित है।

चित्र 9.7: पुष्कर

तिरूपति बालाजी मंदिर आंध्र प्रदेश के दक्षिणी भाग के छोटे से चित्तूर जिले में स्थित है। यह भारत का एक लोकप्रिय मंदिर है। यह भारत का सबसे संपन्न मंदिर माना है क्योंकि यहाँ भक्तों द्वारा बहुत अधिक दान किया जाता है।

वैष्णो देवी मंदिर जम्मू से 60 कि. मी. दूर त्रिकुटा की पहाड़ियों पर स्थित है। भारत-भर में यहाँ सबसे अधिक संख्या में भक्त दर्शन और पूजा करने आते हैं।

चित्र 9.8: वैष्णो देवी

पाठगत प्रश्न 9.1

(i) हिंदुओं के लिए बनारस के महत्व का वर्णन संक्षेप में कीजिए।

(ii) मथुरा के धार्मिक महत्व का वर्णन संक्षेप में कीजिए।

(iii) द्वारका, पुरी और सोमनाथ के धार्मिक पारंपरिक मूल्यों का वर्णन संक्षेप में कीजिए।

क्रियाकलाप 9.1

हिंदू देवी-देवताओं तथा धरोहर स्थानों के चित्र एकत्रित कीजिए और अपनी स्क्रैप बुक में चिपकाएँ।

9.2 जैन धर्म

वर्धमान महावीर को जैन धर्म का संस्थापक माना जाता है। वे जैन धर्म के 24वें तथा अंतिम तीर्थंकर (गुरु) थे। वज्जि की राजधानी वैशाली में उनका जन्म हुआ था। उनके पिता सिद्धार्थ क्षत्रिय वंश के मुखिया थे।

तीस वर्ष की आयु में वर्धमान ने सत्य की खोज में अपना घर त्याग दिया था। उन्होंने सुख और आराम का जीवन त्याग दिया और तपस्वी बन गए। सत्य की प्राप्ति से पहले उन्होंने बारह वर्षों तक तपस्या की। इसी ज्ञानोदय से वे विजयी या जिन कहलाए। इसीलिए उनके अनुयायियों को जैन और उनके दर्शन को जैन धर्म कहा गया है।

92.1 महावीर की शिक्षाएँ

- महावीर ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखते थे और उनका यज्ञ, बलि और कर्मकांडों में कोई विश्वास नहीं था।
- वे जाति प्रथा में विश्वास नहीं रखते थे और सभी मनुष्यों को समानता की शिक्षा देते थे।
- उन्होंने अपने अनुयायियों को चार संकल्प लेने के लिए कहा था – (i) जीवन को नुकसान न पहुँचाएँ (ii) झूठ न बोलें (iii) संपत्ति के स्वामी न बनें (iv) चोरी न करें।
- महावीर ने लोगों को त्रिमार्ग का अनुसरण करने के लिए भी कहा – उचित आस्था, उचित ज्ञान और उचित व्यवहार का मार्ग। उनके अनुसार, यही सर्वाधिक उच्च लक्ष्य यानी सिद्ध शिला तथा मोक्ष, दूसरे शब्दों में जन्म व मृत्यु के चक्र से मुक्ति का मार्ग था। महावीर की सबसे मुख्य शिक्षाओं में से अहिंसा एक थी। यदि आप अपने किसी जैन मित्र से बात करेंगे तो वे आपको बताएँगे कि वे मांस नहीं खाते और न ही मांसाहारी भोजन को छूते हैं। इनमें से कुछ तो अपने मुँह में कपड़े का टुकड़ा बाँधे रखते हैं ताकि कोई किटाणु भी उनके मुँह में आकर मर न जाए। महावीर ने अपने उपदेश आम बोलचाल यानि अर्द्ध मागधी या प्राकृत भाषा में दिए, जिससे उन्हें समझना आसान था। लोगों ने उनके द्वारा बताए गए समानता के विषय को भली-भाँति समझा। उनकी मृत्यु के पश्चात जैन धर्म दो संप्रदायों में विभाजित हो गया– दिगंबर और श्वेतांबर। दिगंबरों में वे सम्मिलित हुए जो वस्त्र नहीं पहनते थे और श्वेतांबर में वे सम्मिलित हुए जो सफ़ेद वस्त्र पहनते थे। बहुत से राजाओं ने अपने राज्य में जैन धर्म को अपनाया, विशेष रूप से मगध के शासकों, बिम्बिसार और अजातशत्रु ने। इन शासकों द्वारा जैन कला, वास्तु-कला और साहित्य का संरक्षण किया गया। माउंट आबू स्थित दिलवाड़ा का मंदिर जैनियों का सबसे सुंदर मंदिर है। महावीर ने अपना संपूर्ण जीवनकाल अंग, मिथिला, मगध और कोसला प्रदेशों में उपदेश देते हुए व्यतीत किया। 527 ईसा पूर्व, 72 वर्ष की आयु में राजगृह के पास स्थित पावापुरी में उनका निधन हो गया।

9.2.2 भारत में जैनियों के धार्मिक तीर्थ स्थल

भारत में ऐसे अनेक स्थान हैं जहाँ प्राचीन काल में जैन धर्म के लोगों से जुड़े होने के कारण जैनियों के लिए विशेष महत्व रखता है। यहाँ कुछ ऐसे स्थान हैं जहाँ जैनियों ने इस संसार का त्याग किया और मोक्ष प्राप्त किया, कुछ स्थानों पर धार्मिक कार्यक्रम मनाए जाते हैं, या कुछ लोकप्रिय मंदिर या मंदिरों का समूह है जिनसे तीर्थस्थल बने हैं। जैनियों के अलावा विश्व के विभिन्न भागों से लोग इन धार्मिक धरोहरों के दर्शन करने के लिए आकर्षित होते हैं। जैन धर्म के कुछ प्रमुख धरोहर निम्नलिखित हैं :

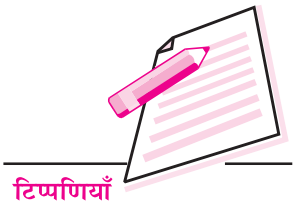

पार्श्वनाथ पर्वत – बिहार में बसा जैनियों का अद्वितीय पवित्र स्थान पार्श्वनाथ पर्वत या सम्मेद शिखर है। ऐसा माना जाता है कि यहाँ 24 में से 20 जैन तीर्थंकरों ने यहाँ देह त्यागा और मोक्ष प्राप्त किया। निचली ढलानों में वनों से घिरे इस आकर्षक चोटी वाले पर्वत का शिखर मंदिरों से ढ़ँका है। बहुत से तीर्थयात्री सभी तीर्थों की यात्रा करने के बाद यहीं आकर अपनी यात्रा का समापन करते हैं। उसके लिए वे इस पहाड़ी के निम्नवर्ती भाग में 30 मील की परिक्रमा करते हैं।

बिहार स्थित पावापुरी बहुत ही सुंदर स्थान है, विशेष रूप से जब यहाँ की विशाल झील पर कमल खिलते हैं। काफी वर्षों से अनगिनत तीर्थ यात्री यहाँ की राख से अपने माथे पर तिलक लगाते हैं। इससे यहाँ पर झील का निर्माण हुआ। यहाँ उस स्थान पर मंदिर की स्थापना की गई है, जहाँ महावीर ने मोक्ष प्राप्त किया था। दूसरा मंदिर उनके दाह-संस्कार वाले जगह पर बना। इस झील में बना टापू पक्की सड़क द्वारा तट से जुड़ा हुआ है। यहाँ जल में उगे सुंदर कमल के फूलों का बहुत ही भव्य नज़ारा दिखाई देता है। महावीर के निर्वाण का स्मरण करते हुए हर वर्ष यहाँ दिवाली का त्योहार बहुत ही उत्साह से मनाया जाता है।

जैसलमेर – राजस्थान स्थित जैसलमेर, जैन पांडुलिपियों और हज़ारों धार्मिक पुस्तकों वाले अपने लोकप्रिय पुस्तकालय के कारण कई विद्वानों के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। न केवल विद्वानों बल्कि बहुत से जैन धर्म के अनुयायियों के लिए भी पीले पत्थरों से निर्मित नक्काशीदार भव्य मंदिरों के कारण आकर्षण का केंद्र है।

राजस्थान के रणकपुर में स्थित यह भव्य मंदिर ईसा पश्चात् 15वीं शताब्दी में बनाया गया था। आमतौर पर जैन मंदिर की दीवारें ऊँची होती हैं, इस मंदिर की बाहरी दीवारों के भीतर 40 हज़ार वर्ग फीट पर ऊँचा मंदिर बना है। इस मंदिर में चार कलात्मक द्वार हैं और सफ़ेद संगमरमर से बनी छह फीट ऊँची प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की चार मूर्तियाँ हैं। ये मूर्तियाँ चारों अलग दिशाओं की ओर उन्मुख हैं, इसीलिए इसे चतुर्मुख भी कहा गया है। मंदिर में अनेक खम्बे हैं, जिनकी संख्या 1444 है। यहाँ बने 29 कक्षों में जिस तरफ भी दृष्टि जाती है, खम्बे दिखाई देते हैं। परंतु ये खम्बे और कक्षों को इस तरह बनाया गया है कि कहीं से भी देखने पर बीच-बीच में खुला प्रांगण दिखाई देता है।

राजस्थान में माउंट आबू स्थित **दिलवाड़ा मंदिर** जैन वास्तुकला की उत्तम रचना होने में कोई संदेह पैदा नहीं करता है। यह अपनी सुंदरता और बारीक नक्काशी के लिए भारत में स्थित एक अद्वितीय रचना है। ऐसा कहा जाता है कि इस मंदिर को बनाने में लगे मज़दूरों को मज़दूरी संगमरमर पर काम करने से निकले चूरे के अनुसार भुगतान किया जाता था। यहाँ मुख्य रूप से दो मंदिर परिसर बने हुए हैं। पहला एक धनी व्यापारी विमल शाह ने लगभग 1030 ईसवी में प्रथम तीर्थंकर की याद में बनाया था, जिसका 1322 ईसवी में नवीनीकरण किया गया। इसकी सजावट के लिए एक विशाल कक्ष में 48 स्तंभ लगाए गए हैं। यहाँ बने गोल गुंबद के 11 घेरे में बारी-बारी से मानव व जीव-जंतुओं की अद्भुत प्रतिमाएँ बहुत ही प्रभावशाली हैं। दूसरा मंदिर तीर्थंकर नेमिनाथ को समर्पित है जो 155 फुट लंबा है। इसकी स्थापना वास्तुपाल ने अपने भाई तेजपाल सहित लगभग

टिप्पणियाँ

1230 ईसवी में की। वह गुजरात के राज्य रक्षक का प्रमुख मंत्री था। वह शत्रुंजय और गिरनार सहित पचास से अधिक धार्मिक इमारतों का निर्माण कराने के लिए उत्तरदायी था। प्रत्येक मंदिर परिसर में चारों ओर सुंदर प्रतिमाएँ हैं। यह चारों ओर से दीवारों से घिरा होता है और आधार पर सुंदर प्रतिमाएँ बनी होती हैं। न केवल भव्य मंदिर बल्कि समुद्र तल से 4000 फुट ऊपर का बेहद सुंदर नज़ारा इस स्थान को और भी आकर्षक बना देता है। जैन परंपरा का यह बेहद खास तीर्थ स्थल माउंट आबू की ओर पर्यटकों को आकर्षित करता है।

गिरनार – गुजरात स्थित गिरनार में इतने मंदिर व तीर्थ स्थल पाए जाते हैं कि इसे मंदिरों का नगर माना जाता है। यह इस बात से प्रसिद्ध है कि जहाँ तीर्थंकर नेमीनाथ ने मोक्ष प्राप्त किया था। गिरनार पर्वत के शिखर पर स्थित एक लोकप्रिय मंदिर हज़ार वर्षों से भी अधिक पुराना है। यहाँ के शिलालेखों से पता चलता है कि इसकी मरम्मत 1278 ईसवी में की गई थी। यह आयताकार मंदिर 70 तीर्थंकरों के मूर्तियों से घिरा है। हालाँकि यह सर्वाधिक विशाल मंदिर है परंतु यहाँ अनेक मंदिर हैं जिनमें से एक मंदिर की स्थापना 1231 ईसवी में वास्तुपाल द्वारा की गई थी। इसे 19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ को समर्पित किया गया है।

शत्रुंजय गुजरात में स्थित एक प्राचीन पारंपरिक तीर्थस्थल है। ऐसा कहा जाता है कि प्रथम तीर्थंकर ऋषभ और उनके प्रमुख अनुयायी ने यहाँ मोक्ष प्राप्त किया था। नौ दीवारों वाले इस मंदिर के भीतर सैंकड़ों छोटे मंदिर स्थित हैं। 12वीं सदी के मध्य में ऋषभ देव के प्राचीन मंदिर के स्थान पर नवीन मंदिर बनाया गया। 1231 ई में वास्तुपाल द्वारा यहाँ सात मंदिर स्थापित किए गए। कुछ मंदिरों को देखकर पता लगाया जा सकता है कि ये दसवीं शताब्दी के हैं। 17वीं शताब्दी तक आते-आते शत्रुंजय बहुत महत्वपूर्ण स्थल माना जाने लगा था। यह बहुत ही विशिष्ट और लोकप्रिय स्थान बन गया। इस स्थान पर लोग काफी संख्या में दर्शन करने आते हैं। यहाँ का मार्ग समझाने के लिए निर्देश पुस्तकें भी लिखी गई ताकि तीर्थयात्री आसानी से दर्शन कर सकें। हर वर्ष किसी एक दिन यहाँ की 12 मील की यात्रा करने वाले दर्शनार्थियों की संख्या लगभग 20 हज़ार हो जाती है। यह यात्रा बहुत ही कठिन मानी जाती हैं परंतु इसका आंनद इसके संघर्ष को सार्थक बना देता है।

श्रवण बेलगोला – यह मैसूर से 62 मील दूर है। इस पहाड़ी पर 470 फीट की ऊँचाई पर लगभग 500 कदम दूर बाहुबली की विशालकाय प्रतिमा स्थित है। यह 57 फुट ऊँची और कंधे के पास 26 फुट चौड़ी है। लगभग 980 ई में चट्टानों पर नक्काशी करके इसे बनाया गया था। यह विश्व भर में स्वतंत्र रूप से खड़ी सबसे विशाल प्रतिमा है। जैन मंदिर में इस प्रतिष्ठित प्रतिमा को हर दिन स्नान कराया जाता है। श्रवण बेलगोला की प्रतिमा इतनी विशाल है कि स्नान कराने के रीति-रिवाज को केवल चरणों को धोकर पूरा कराया जा सकता है। प्रत्येक बारह से पंद्रह वर्ष के अंतराल में यहाँ बहुत बड़ी मचान भी लगाई जाती है और जल में चंदन, नारियल और चीनी को मिला कर प्रतिमा पर इसकी वर्षा की जाती है।

रणकपुर मंदिर – रणकपुर राजस्थान में स्थित एक छोटा-सा गाँव है। इस मंदिर में बहुत ही भव्य नक्काशी की गई है। यहाँ का वास्तुशिल्प जैनियों की गहरी आस्था एवं इसकी समृद्धि का प्रमाण देता है। यह जैनियों का लोकप्रिय तीर्थ स्थल है।

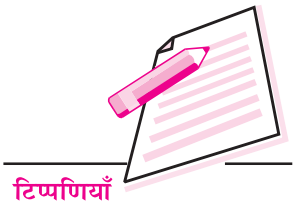

टिप्पणियाँ

पाठगत प्रश्न 9.2

1. जैनियों के मुख्य संप्रदाय कौन-कौन से हैं?
2. बिहार में पार्श्वनाथ के जैन धरोहरों की महत्ता के बारे में लिखिए।
3. राजस्थान में माउंट आबू स्थित जैन मंदिर क्यों लोकप्रिय है?

क्रियाकलाप 9.2

भारत में स्थित जैन धरोहरों के चित्रों को एकत्रित कीजिए और अपनी कॉपी में चिपकाएँ और इनके बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखें। इन्हें भारत के मानचित्र में भी दर्शाएँ।

9.3 बौद्ध धर्म

इस धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध शाक्य वंश के थे। उनके पिता इस वंश के मुखिया थे। ईसा पूर्व 560 में लुंबिनी (बाग) के निकट कपिलवस्तु में गौतम का जन्म हुआ था।

उनके पिता नहीं चाहते थे कि वे संत बनें। उनके पिता उन्हें अपने पास उपलब्ध हर प्रकार के भोग-विलास के साधन दिए।

ऐसा माना जाता है कि एक दिन वे घूमने के लिए निकले और उन्होंने एक वृद्ध, एक बीमार और एक मृत व्यक्ति को देखा। इससे पहले इस राजकुमार ने केवल सुख और खुशियाँ देखीं थीं। वे मनुष्य के दुखों को देख और सह नहीं सके। उन्होंने मोक्ष और सत्य की खोज में अपने घर को त्यागने का निर्णय किया। एक रात जब उनकी पत्नी और बच्चे सो रहे थे, वे चुपके से घर से निकल गए और तपस्वी बन गए।

उन्होंने बहुत से ज्ञानियों से बात की परंतु सत्य को खोज पाने में सफल न हो सके। तब, बोधगया में पीपल के वृक्ष के नीचे उन्होंने बहुत लंबे समय तक ध्यान लगाया। अंत में, उन्होंने दुखों का कारण जाना। फिर वे ज्ञानी बुद्ध बन गए। उन्होंने अपना पहला उपदेश वाराणसी के निकट सारनाथ स्थित मृग उद्यान में दिया था। वहाँ उनके पहले पाँच अनुयायी बने। 80 वर्ष की आयु में बुद्ध ने कुशीनगर में महापरिनिर्वाण (मोक्ष) की प्राप्ति की। गौतम बुद्ध के धार्मिक दर्शन को बौद्ध धर्म कहा जाता है।

9.3.1 बुद्ध की शिक्षाएँ

बुद्ध ने सिखाया कि मनुष्य के सभी दुखों का कारण इच्छा है। इच्छाओं को नियंत्रित करना व इस पर विजय पाना बहुत ही महत्वपूर्ण है।

- इसे अष्टांग मार्ग पर चल कर प्राप्त किया जा सकता है, जिसका अर्थ है- उचित व्यवहार, उचित वाणी, उचित कर्म, जीविका का उचित साधन, उचित प्रयास, उचित सचेतन, उचित ध्यान, उचित संकल्प और उचित दृष्टिकोण। बुद्ध ने साधारण व्यक्तियों की भाषा में अपनी बात समझाई, जैसे पालि और प्राकृत भाषा में। उन्होंने जीवन के गुणों और नैतिक मूल्यों पर ध्यान दिया।

बौद्ध धर्म एक संगठित धर्म है। बौद्ध भिक्षुओं के लिए संघ निर्मित किए गए हैं। भिक्षुओं के रहने के लिए विहार बनाए गए थे। शिक्षा के लिए इन संघों को राज्य का संरक्षण प्राप्त हुआ, जिससे नालंदा जैसे महा विश्वविद्यालय उभर कर आए। बौद्ध धर्म का प्रसार विश्व के कई देशों में हुआ।

इस विषय के विद्यार्थी के रूप में यदि आप पर्यटन को अपना पेशा चुनना चाहते हैं, आपको उन स्थानों से परिचित होना चाहिए ताकि आप यात्रियों और दर्शकों को इन स्थानों और इनके महत्व के बारे में बता सकें। अत: अब हम भारत के बौद्ध तीर्थ स्थलों के बारे में जानेंगे।

9.3.2 भारत के बौद्ध धरोहर/स्थान

सारनाथ : वाराणसी से केवल कुछ मील दूर सारनाथ में बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद अपना पहला उपदेश दिया था। सारनाथ में स्तूपों के अवशेष मिलते हैं। यहाँ स्थित मुख्य तीर्थ सारनाथ संग्रहालय के सामने मौर्य राजवंश के राजा अशोक द्वारा स्थापित स्तंभ हैं। इस संग्रहालय में पाँच आकर्षक प्रतिमाएँ स्थापित की गई हैं। इससे मौर्य और गुप्त राजवंशों के इतिहास का ज्ञान होता है। सारनाथ में धमेख स्तूप भी है। ऐसा माना जाता है कि बुद्ध ने अपना पहला उपदेश यहीं पर दिया था।

अमरावती स्तूप : इसका समय ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी का माना जाता है। इसके अधिकतर अवशेष चेन्नई के संग्रहालय में मिलते हैं। भरहुत स्तंभ का समय भी ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी का माना जाता है और इसके अधिकतर अवशेष कोलकाता संग्रहालय में मिलते हैं।

सांची, मध्य प्रदेश : सांची का मुख्य तोरण आंध्र प्रदेशियों द्वारा (सातवाहन) ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी में (अथवा संभवत: इसके बाद) बनवाया था। अमरावती मूर्तिकला की यादें ताज़ा करते हुए नागार्जुनकोंड कभी बौद्धों का एक समृद्ध केंद्र रहा था। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी से इस विशाल बौद्ध स्थल के अवशेष संग्रहालय में रखे गए हैं।

हरवानी : जम्मू और कश्मीर स्थित हरवान कभी बौद्धों का संपन्न स्थल माना जाता था। यहाँ स्थापित स्तूपों के अवशेष तथा अनेक प्रतिमाएँ हैं। सजी हुई ये प्रतिमाएँ दोनों रूपों में थीं- नैसर्गिक और अमूर्त। इसमें मानवीय आकृतियाँ भी शामिल हैं- जिनमें नृत्यकार और संगीतकार, घुड़सवार, बातचीत करते जोड़े, पक्षी, जानवर, फूल, बेल और लताओं आदि को भी दर्शाया गया है। सांची अपने स्तूपों, विशालकाय अशोक स्तंभों, मंदिरों, आश्रमों और मूर्तिकलाओं के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। सम्राट अशोक ने यहाँ की सुंदर पहाड़ियों से आकर्षित होकर इस तीर्थ की स्थापना की। उन्होंने यहाँ विशाल स्तूप स्थापित किए। उसके बाद अशोक ने बौद्ध धर्म का प्रसार करने के लिए बुद्ध के अवशेषों को विश्वभर में अनेक स्तूप स्थापित करने के लिए वितरित किया।

मूल रूप से ये स्तूप कम ऊँचाई के गोलाकार ईंट के बने थे, परंतु आज के स्तूपों से छोटे थे। इनके आधार ऊँचे सीढ़ीदार थे। इसके शीर्ष पर छाते के आकार का पत्थर लगा हुआ था। इन स्तूपों में भगवान बुद्ध के अवशेष रखे थे। बाद में इन स्तूपों का प्रयोग व्यापक रूप से बौद्ध धर्म की स्थापना हेतु बीज रूप में किया जाने लगा।

अजंता, औरंगाबाद, महाराष्ट्र : ये बौद्धों की मूल गुफ़ाएँ ईसा पूर्व दूसरी और पहली शताब्दी की हैं। गुप्त काल के समय इन गुफ़ाओं में कई चित्र और प्रतिमाएँ बनीं। अजंता की ये गुफ़ाएँ (20°30' उत्तरी अक्षांश तथा 75°40' पूर्वी देशांतर) औरंगाबाद के उत्तर दिशा में 107 कि.मी. की दूरी पर स्थित हैं। लगभग 12 कि.मी. दूर स्थित अजंता गाँव के नाम पर इन गुफ़ाओं का नाम पड़ा। इन गुफ़ाओं की खोज ब्रिटिश सेना की मद्रास रेजीमेंट के एक आर्मी अफसर द्वारा शिकार के दौरान 1819 में की गई। तभी से अजंता की गुफाएँ बहुत लोकप्रिय हो गईं और यह विश्व भर में एक महत्वपूर्ण पर्यटन गंतव्य स्थान बन गया। ये गुफाएँ, अपनी प्रतिमाओं (भित्ति चित्रों) भारतीय कला के उत्तम नमूनों, विशेषरूप से चित्रकारी के कारण प्रसिद्ध हैं।

चित्र 9.9: अजंता गुफाएँ

9.3.3 भागलपुर क्षेत्र में चट्टानों पर नक्काशियाँ

बिहार के भागलपुर और सुल्तानगंज में गुप्त काल (5वीं-7वीं ईसवी) में निर्मित चट्टानों पर नक्काशियाँ बुद्ध को दर्शाती हैं।

नालंदा, बिहार : ईसा पश्चात चौथी से 12वीं शताब्दी काल में नालंदा बौद्ध अध्ययन का महत्वपूर्ण केंद्र था। प्राचीन काल में नालंदा ज्ञान का अभूतपूर्व केंद्र रहा है। विश्व के सर्वाधिक प्राचीन विश्वविद्यालय के खंडहर यहाँ हैं। यह बोधगया से 62 कि. मी. और पटना से 90 कि.मी. दूर दक्षिण में स्थित है। चूँकि बुद्ध अपने जीवनकाल में कई बार नालंदा गए थे, इसीलिए यह बाद में 5वीं से 12वीं शताब्दी के दौरान काफी प्रसिद्ध हो गया। 7वीं शताब्दी में चीन पर्यटक ह्वेनसांग

यहाँ ठहरे और शिक्षा प्रणाली की उत्कृष्टता और मठवासियों के जीवन की पवित्रता की विस्तृत जानकारी के बारे में लिखा। उन्होंने प्राचीन काल के इस अद्भुत विश्वविद्यालय के परिवेश और वास्तुशिल्प का जीवंत वर्णन भी किया। यहाँ विश्व के 2000 शिक्षक और 10,000 बौद्ध भिक्षु बौद्ध धर्म पालन करने वाले प्रदेशों से आए और विश्व के प्रथम आवासीय अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में रह कर पढ़ाई की।

उदयगिरी : ईसा पश्चात छठी शताब्दी से रत्नागिरि में स्थित बौद्ध स्थल उदयगिरी कटक (ओडिशा) से बहुत दूर नहीं है। आठवीं शताब्दी में यह बौद्ध कला और दर्शन के वज्रयान संप्रदाय का मुख्य केंद्र बन गया था। सिरपुर और छत्तीसगढ़ में आप आठवीं शताब्दी के बौद्ध मठों के अवशेष देख सकते हैं।

बोधगया : यह बौद्धों के चार प्रमुख पवित्र तीर्थों में से एक है। विश्व-भर से बौद्ध धर्म के अनुयायी बोधगया का दर्शन करना सबसे पवित्र मानते हैं।

बौद्ध धर्म के संस्थापक, गौतम बुद्ध, ने बोधगया में ही पवित्र वटवृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति की थी। बिहार के बोधगया में महाबोधि मंदिर वास्तव में कुषाण काल में ईसा पश्चात दूसरी शताब्दी में ही बनाया गया था परंतु आठवीं से बाहरवीं शताब्दी के मध्य पाल और सेना शासकों ने व्यापक तौर पर इसका नवीनीकरण किया था। इसके बाद, वर्ष 1882 में म्यांमार के बौद्धों ने इसका नवीनीकरण का कार्य किया।

राजगीर मगध के राजाओं की प्राचीन राजधानी थी। राजगीर का अर्थ है- राजा का भवन। यह बौद्धों का महत्वपूर्ण स्थल है क्योंकि यहाँ भगवान बुद्ध ने अपने जीवन के 12 वर्ष बिताए थे।

मठ और विहार : हिमाचल प्रदेश में मैकलोडगंज में दलाई लामा के मंदिर को सुगलाखांग के नाम से जाना जाता है। यहाँ तीन महत्वूर्ण प्रतिमाएँ देखने को मिलती हैं। इसमें शाक्यमुनि यानि बुद्ध की तीन मीटर ऊँची सोने का पानी चढ़ा सुनहरी प्रतिमा भी शामिल है। तिब्बत के बाएं ओर अवलोकितेश्वर और पद्मासंभव या गुरु रिनपोचे की प्रतिमाएँ हैं। ये भारतीय विद्वान थे जिन्होंने आठवीं शताब्दी में तिब्बत के लोगों को बौद्ध धर्म और तंत्र-मंत्र की शिक्षा दी थी। स्पिति में 'की गोंपा' सर्वाधिक विशाल और प्राचीन गोंपा है। यह प्राचीन ठंगकाओं और भित्तिचित्रों के अपने अमूल्य संकलन के लिए प्रसिद्ध है।

कश्मीर घाटी से तिब्बत के पश्चिमी भाग के बीच व्यापार मार्ग पर आपको कई मठ (गोंपा) मिल जाएँगे। इनमें से प्रमुख हैं- लामागुरु स्पिति, "प्यांग, थिकसे, हेमिस आदि। ये तिब्बत और इसके उपनगरों में पाए जाते हैं। ये अधिकतर पहाड़ियों की तीव्र ढलानों पर स्थित हैं। ऐसा माना जाता है कि लद्दाखियों के जीवन में इन मठों का महत्वपूर्ण स्थान है। लेह में मनाए जाने वाले प्रत्येक त्योहार का धार्मिक महत्व है। यह सभी जातियों और धर्मों के लोगों को इनमें स्वतंत्र रूप से भाग लेने के लिए आकर्षित करता है।

तिब्बत के सीमावर्ती क्षेत्रों में हिमाचल के बौद्ध क्षेत्रों जैसे किन्नौर, लाहौल एवं स्पिति में बौद्ध धर्म के स्मरणीय मठ और विहार स्थित हैं।

एक अत्यंत लोकप्रिय मठ जिसे पर्यटकों का आकर्षण केंद्र माना जाता है, वह है 'ताबो मठ' जिसे तिब्बती विद्वान और धार्मिक नेता रिन चान सांग पो ने स्पिति नदी के तट पर बनवाया था। एक हज़ार वर्ष से भी अधिक पुराने इस मठ का वातावरण बहुत ही धार्मिक और आध्यात्मिक है। जून 1996 में इसका हज़ारवाँ वर्ष मनाया गया था। पर्यटकों के लिए यहाँ देखने योग्य एक और स्थल है, साराहवी गाँव में बना भीमाकाली मंदिर। परंतु सबसे पुराना धार्मिक स्थल व्यास की गुफ़ा है। यह गुफ़ा जो मार्कंडेय मंदिर में भूमिगत मार्ग के रूप में बनी हुई है। यहाँ संत मार्कंडेय तपस्या करते थे।

सिक्किम में गंगटोक के पश्चिम में रूमटेक मठ में ऐसे देवी-देवताओं का निवास माना जाता है जो सांसारिक चक्र से सचेत करते हैं। चीनियों द्वारा नष्ट किए गए तिब्बती मठ की तरह 1960 के दशक में नया मठ का निर्माण किया गया।

दार्जिलिंग से कुछ ही मील दूर स्थित यिगा-चोएलिंग मठ में ताँबे की तुरही की ध्वनि सुनाई देती है। एक शताब्दी पहले स्थापित इस मठ में भावी बुद्ध यानी मैत्रेय की विशालकाय चमकदार प्रतिमा भी है, जो इस क्षेत्र के लोगों की आस्था को दर्शाती है।

वैशाली : बिहार में एक छोटा-सा शहर है। भारत में वैशाली एक प्रसिद्ध बौद्ध धार्मिक स्थल है। वैशाली का अर्थ है समृद्धि और यह स्थान अपने नाम की तरह ही समृद्ध है।

पाठगत प्रश्न 9.3

1. बौद्ध दर्शन के चार महान सत्यों का वर्णन कीजिए।
2. बौद्ध धर्म के अनुसार कोई व्यक्ति निर्वाण कैसे प्राप्त कर सकता है?

क्रियाकलाप 9.3

- भारत के मानचित्र पर भारत के प्रमुख बौद्ध धरोहरों को दर्शाइए और प्रत्येक के बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखिए।
- बौद्ध धर्म से संबंधित जिलों, पर्यटक सर्किट और यात्री रेलों के नामों को ढूँढने का प्रयास कीजिए।

आपने क्या सीखा

- प्राचीन समय में भारत में तीन महत्वपूर्ण और लोकप्रिय धर्मों का उद्गम हुआ है। ये हैं – हिंदू धर्म (ब्राह्मण धर्म), जैन धर्म और बौद्ध धर्म।

- इसके बाद ब्राह्मणों ने वेदों और ब्राह्मण धर्म को बहुत ही जटिल बना दिया। उन्होंने अपने स्वार्थ लाभों के लिए कई रूढ़ि-रिवाज़ों का आरंभ किया।
- इसकी प्रतिक्रिया में नए धर्मों जैसे जैन और बौद्ध धर्म का उदय हुआ। वर्धमान महावीर को जैन धर्म का संस्थापक माना गया।
- जैन धर्म में लोगों को चार संकल्पों के बारे में समझाया। ये हैं– (i) जीवन को नुकसान न पहुँचाना (ii) झूठ न बोलना (iii) संपत्ति पर कब्ज़ा न करना (iv) चोरी न करना।
- महावीर ने त्रिमार्ग का उपदेश दिया। ये उचित आस्था, ज्ञान और सच्चा व्यवहार थे। जैनियों के अनुसार सिद्ध शिला सबसे उच्च लक्ष्य है।
- गौतम बुद्ध बौद्ध धर्म के संस्थापक थे। बुद्ध के अनुसार इच्छा हर समस्या का कारण है।
- उन्होंने अष्टांग मार्ग का उपदेश दिया, जिसका अर्थ है उचित व्यवहार, वाणी, कर्म, जीविका का साधन, प्रयास, सचेतन, ध्यान, संकल्प और दृष्टिकोण।
- राम और कृष्ण सहित बुद्ध को दस अवतारों में से एक माना जाता है। आप हिंदू, जैन और बौद्ध धर्म के मुख्य धार्मिक तीर्थ स्थलों से परिचित हुए।

पाठांत अभ्यास

1. जैन और बौद्ध धर्म में प्रमुख अंतर को स्पष्ट कीजिए।
2. हिंदू संस्कृति के महत्वपूर्ण मूल्यों की व्याख्या कीजिए।
3. भारत के किन्हीं दस हिंदू धार्मिक धरोहर स्थलों के बारे में वर्णन कीजिए।
4. जैनियों की विभिन्न शिक्षाओं के बारे में चर्चा कीजिए।
5. भारत के मुख्य जैन धरोहर स्थलों पर प्रकाश डालिए।
6. बौद्ध संस्कृति की मुख्य विशेषताओं की चर्चा कीजिए।
7. भारत के दस सुप्रसिद्ध बौद्ध धरोहर स्थलों की सूची बनाइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

9.1

1. यह वह स्थान है जहाँ हिंदू मोक्ष प्राप्त करने के लिए मृत्यु को प्राप्त करना चाहते हैं। यह भगवान विश्वनाथ (शिव) के मंदिर तथा शिक्षा के केंद्र के रूप में जाना जाता है।

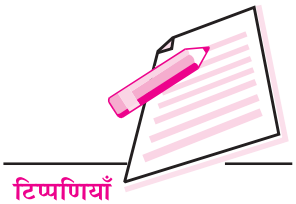

2. यह भगवान कृष्ण का जन्मस्थान है।

3. इन मठों की स्थापना आदि शंकराचार्य द्वारा किया गया।

9.2

1. जैनियों के दो संप्रदाय हैं- क. दिगंबर ख. श्वेतांबर

2. राणकपुर में ऋषभदेव की संगमरमर से बनी लोकप्रिय प्रतिमा है और गिरनार में अन्य तीर्थंकर नेमिनाथ की।

3. माउंट आबू, राजस्थान दिलावाड़ा के जैन मंदिर के लिए प्रसिद्ध हैं जो जैन वास्तुकला की उत्तम रचना हैं।

9.3

1. उचित आस्था, उचित व्यवहार, उचित वाणी और उचित ज्ञान।

2. अष्टांग मार्ग का अनुसरण करके कोई व्यक्ति मोक्ष प्राप्ति के अंतिम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।